टीच फ़ॉर इंडिया

ऋचा वर्मा

नामी संस्थानों के भारतीय डिग्रीधारी अपने कॅरिअर की योजना स्थगित कर दो साल के लिए पूर्णकालिक अध्यापक के तौर पर चुनौतियों से जूझ रहे स्कूलों में पढ़ाएंगे।

शिक्षा के इतिहास के सबसे महान जनान्दोलनों में से एक टीच फ़ॉर अमेरिका क्या भारत में भी उतने ही ज़र्बदस्त ढंग से काम करेगा? भारत में शिक्षा के क्षेत्र के कुछ युवा सितारों को लगा कि इस प्रश्न का उत्तर ''हां'' ही हो सकता है। और इसलिए उन्होंने इस आंदोलन को भारतीय संदर्भ में ढालने की संभावना तलाशी। उन्होंने टीच फ़ॉर अमेरिका की सह-संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी वेंडी कॉप से संपर्क किया और उन्हें भारत आने का न्यौता दिया।

कॉप बताती हैं, ''उस यात्रा में मैंने पाया कि टीच फ़ॉर इंडिया का वक्त आ चुका है। कॉलेज स्नातकों में अगुआ रहने वाले इस अवसर को हाथोंहाथ लेंगे और इस विचार को शिक्षा, शासन और निजी और परोपकारी क्षेत्रों से भागीदारी हासिल होगी।''

टीच फ़ॉर इंडिया के 100 अत्यंत प्रतिभाशाली और युवा भारतीय प्रोफ़ेशनलों का पहला दल जून 2009 में कार्य शुरू करेगा। टीच फ़ॉर इंडिया के कार्यकारी मंडल की निदेशक वेंडी कॉप कहती हैं, ''टीच फ़ॉर इंडिया में भारत के सबसे सुविधाविहीन वर्गों के बच्चों के जीवनों पर प्रभाव डालने की बड़ी संभावना है। इसके साथ ही यह भारत के भावी नेतृत्व की प्रतिभा और ऊर्जा को यहां मौजूद असमानताओं के मुकाबले के लिए जुटाएगा।''

टीच फ़ॉर अमेरिका के हज़ारों अमेरिकी ग्रेजुएटों की ही तरह टीच फ़ॉर इंडिया के स्वंयसेवक भी अपने कॅरिअर को दो बरस के लिए स्थगित कर भारत की सबसे विपन्न और चुनौती भरी स्कूलों के बच्चों को श्रेष्ठतम शिक्षा से परिचित करवाएंगे।

भारत में टीच फ़ॉर इंडिया पहल की मुखिया शाहीन मिस्त्री कहती हैं कि यह कार्यक्रम टीच फ़ॉर अमेरिका के बेहतरीन अनुभवों का उपयोग करेगा, ''इसका उद्देश्य युवा नेतृत्व का एक ऐसा आंदोलन रचना है जो भारत में शैक्षिक असमानता समाप्त करने की दिशा में कार्य करे। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए टीच फ़ॉर इंडिया को स्थानीय संदर्भ और संस्कृति के अनुरूप हल तलाशने होंगे।''

इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए पढ़ाने से जुड़ी उपाधि ज़रूरी नहीं है लेकिन चुने गए युवा दो वर्ष की अवधि के लिए वेतनभोगी अध्यापक बनेंगे। स्कूलों में भेजे जाने से पहले उन्हें गहन प्रशिक्षण देकर पढ़ाने के लिए तैयार किया जाएगा।

टीच फ़ॉर इंडिया के अध्यापकों को उस पद और अनुभव के साथ काम करने वाले नियमित अध्यापक जितना वेतन और साथ ही मकान के किराए और आवागमन के खर्च के लिए भत्ता मिलेगा। उनका पूरा वेतन या उसका हिस्सा टीच फ़ॉर इंडिया द्वारा सीधे दिया जाएगा लेकिन उन्हें किस स्कूल में पढ़ाना है, यह टीच फ़ॉर अमेरिका तय करेगा।

टीच फ़ॉर इंडिया को टेक्सस की माइकल एंड सूसन डेल फाउंडेशन से वित्तीय सहायता मिल रही है, कुछ निजी दानदाता भी धन दे रहे हैं, लेकिन फिलहाल कारपोरेट प्रायोजक नहीं हैं। टीच फ़ॉर इंडिया का कहना है कि वह सक्रिय रूप से उस तरह के उद्यमों से स्पांसरशिप प्राप्त करने के प्रयासों में जुटा है जो टीच फ़ॉर अमेरिका के कार्यक्रमों को प्रायोजित करते हैं।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार 33 प्रतिशत भारतीय निरक्षर हैं और 6 से 10 वर्ष की आयु के लगभग 4.2 करोड़ बच्चे स्कूलों में नहीं जा रहे हैं। मिस्त्री कहती हैं कि उन्हें आशा है कि कार्यक्रम ''एक महान अध्यापक '' के महत्व को स्थापित करेगा और अध्यापन को प्रेरणा प्रदान करने वाला स्वरूप देगा।''

टीच फ़ॉर इंडिया अभिभावकों, स्कूल प्रशासकों और अन्य महत्वपूर्ण हितग्राहियों सें जुड़कर अपने कार्यक्रम के लिए समर्थन जुटाएगा। मुम्बई और पुणे से शुरुआत करके 2013 तक भारत के कम से कम दर्ज़न भर शहरी और ग्रामीण केंद्रों में 2,000 प्रतिभाशाली स्नातक पहुंचाने की योजना है।

भारत टीच ऑफ़ अमेरिका से बहुत कुछ सीख सकता है जो अमेरिका में सर्वश्रेष्ठ युवाओं को आकर्षित करने वाले कार्यक्रम के रूप में मशहूर हो चुका है।

वेंडी कॉप को विश्वास है कि टीच फ़ॉर अमेरिका की सफलता की कहानी भारत में दोहराई जा सकती है, ''आज यह सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली में सबसे बड़े सहयोगी कार्यक्रमों में से एक है जो 6,000 अध्यापकों के माध्यम से लगभग 500,000 छात्रों के जीवन को प्रभावित कर रहा है। टीच फ़ॉर अमेरिका के पूर्व स्वंयसेवक शिक्षा सुधार आंदोलन में अग्रणी हैं- वे स्कूल तंत्र को नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं, कम आय वर्ग समुदायों की स्कूलों के मुख्याध्यापक हैं, अनुभवी अध्यापकों के रूप में प्रशंसा पा रहे हैं, सामाजिक उद्यमियों के तौर पर नए हल ढूंढ रहे हैं। मुझे लगता है कि यह मॉडल भारत में भी संभवत: उतना ही और संभवत: उससे ज़्यादा प्रभाव डाल सकता है।''

http://www.teachforindia.org/